ब्रह्मपुर-गिरि रोड(ओडिशा)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, इस्पात और यातायात मंत्री विभूति भूषण जेना, विधायक अनिल कुमार, कर्नल एल टी श्रीकांत और उनकी युगल।

बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। विधायक डॉ. सुनील कुमार से मुलाकात कर परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. ज्योति एवं ब्र.कु. रिमझी।

रावत भाटा-राज.। मीडिया एवं पत्रकारों के सम्मान हेतु ब्रह्माकुमारीज़ गांधीनगर द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंकिता, ब्र.कु. आशा,प्रतापनगर, ब्र.कु. कोमल,एडिटर इन चीफ मधुबन न्यूज़,माउंट आबू, एसडी वैष्णव सुखवाल,सुखवाल समाज अध्यक्ष, डॉ. अर्जुन मुंद्रा,सीए एवं श्रीमती वंदना विजयनी,अर्बन बैंक की एमडी।

उदयपुर-राज.। महाराणा विश्वराज सिंह से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीटा। साथ हैं ब्र.कु. रश्मि।

चक्रधरपुर-झारखंड। श्री श्रीमद्भगवद् कथा सप्ताह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् कथा व्यास पूज्य श्री पंडित जीतू दास महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

प्रयागराज-उ.प्र.। केंद्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद के हिंदी विभाग के सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्य के प्रोफेसर डॉ. संतोष भदौरिया को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।

'चाहिए' शब्द का त्याग, तो होगा तीव्र पुरुषार्थ...

ये हम सबका सौभाग्य है कि विश्व परिवर्तक के महान कार्य के लिए स्वयं परमात्मा ने हमें चुना है। न सिर्फ चुना है बल्कि उस कार्य को करने के लिए शक्ति देकर समर्थवान भी बनाया है। ऐसे परम प्यारे परमपिता परमात्मा की समय को देखते हुए हमारे प्रति शुभ आश है कि मेरा हर बच्चा थोड़ी-सी मेहनत कर ऊंचता को प्राप्त करे।

संगमयुग पर स्वयं परमपिता परमात्मा शिव बाबा हमें विश्व का मालिक बनाने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। बाबा का हर महावाक्य हमारे जीवन के लिए एक पत्थर की लकीर है। मुरली में बाबा अक्सर एक सूक्ष्म कमज़ोरी की ओर हमारा ध्यान खिंचवाते हैं, जो हमें 'नम्बर वन' बनने से रोकती है। वह शब्द है... 'चाहिए'।

'चाहिए' शब्द पुरुषार्थ की सबसे बड़ी रुकावट

हम अक्सर कहते हैं- 'मुझे अमृतवेला उठना चाहिए', 'मुझे वाणी पर संयम रखना चाहिए', 'मुझे देहअभिमान छोड़ना चाहिए', 'मुझे तुरंत रिएक्ट नहीं करना चाहिए', 'मुझे परिस्थितियों के प्रभाव से मुक्त रहना चाहिए'। बाबा कहते हैं कि जैसे ही आप 'चाहिए' शब्द का प्रयोग करते हैं, आप उस कार्य को 'कल' पर टाल देते हैं। ये शब्द मन में एक अधूरापन और भविष्यकाल पैदा करता है। इसमें संकल्प तो है, लेकिन शक्ति नहीं। यही कारण है कि बहुत सोचकर भी वह कर नहीं पाते जो हम चाहते हैं। यह 'चाहिए' शब्द ही पुरुषार्थ को 'मेहनत' बना देता है और हम थकने लगते हैं।

फुलस्टॉप(बिन्दी) की शक्ति

बाबा की शिक्षा है कि जैसे ही मन में 'चाहिए' का संकल्प आये, उसे विस्तार न देकर तुरंत 'फुलस्टॉप' लगाओ। फुलस्टॉप लगाने का अर्थ है - व्यर्थ के चिंतन को वहीं समाप्त करना। जब हम बिन्दु रूप(आत्मा) की स्थिति में स्थित हो जाते हैं, तो मन की भटकन रुक जाती है। बाबा कहते हैं, 'बच्चे, बिन्दी लगाकर बीती को बिसार दो और जो शुभ संकल्प आया है, उसे अभी कर्म में उतारो'।

'सोचना' नहीं 'करना' है (इमीडिएट एक्शन)

तीव्र पुरुषार्थी और साधारण पुरुषार्थी में यही अन्तर है कि साधारण पुरुषार्थी सोचता रहता है, जबकि तीव्र पुरुषार्थी 'तुरंत दान महा कल्याण' के मंत्र पर चलता है। बाबा कहते हैं कि यदि मन में आया कि मुझे अभी योग में बैठना है, तो 'बैठना चाहिए' मत कहो, बल्कि तुरंत बैठ जाओ। यदि किसी को सुख देना है, तो 'देना चाहिए' के बजाय देना शुरू करो। जब आप तुरंत कर्म करते हैं तो माया को वार करने का समय नहीं मिलता और आपकी मेहनत समाप्त होकर 'सहजता' आ जाती है।

'चाहिए' को 'है' में बदलें

अपनी आंतरिक भाषा को बदलें। 'मुझे शांत रहना चाहिए' के स्थान पर स्मृति रहे कि 'मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ'। जब आप स्वयं को उस स्वरूप में स्थित कर लेते हैं, तो 'चाहिए' कि आवश्यकता ही नहीं रहती। बाबा कहते हैं कि बच्चे अब 'स्वरूप' बनें, केवल 'ज्ञानी' नहीं। सतयुग में देवता 'चाहिए' नहीं कहते, वे सम्पूर्ण होते हैं। हमें अभी से उसी संस्कार का अभ्यास करना है।

तीव्र गति से उड़ती कला का अनुभव

जब 'चाहिए' का बोझ उतर जाता है और फुलस्टॉप की शक्ति आ जाती है, तो पुरुषार्थ की गति 'तीव्र' हो जाती है। प्यारे बाबा कहते हैं कि अब समय बहुत कम है, अन्तिम घड़ी नज़दीक है। अगर अभी भी 'चाहिए' के फेरे में फंसे रहे, तो मंज़िल तक पहुंचना कठिन होगा। जो बच्चे 'करके दिखाते' हैं, उन्हीं पर बाबा की विशेष कृपा और मदद की वर्षा होती है।

प्यारे बाबा की हम बच्चों से बहुत ऊंची आश है, वह हमें 'मास्टर सर्वशक्तिवान' के रूप में देखना चाहते हैं। 'चाहिए' शब्द एक कमज़ोरी है, इसे त्याग कर 'अभी' और 'इसी वक्त' के मंत्र को अपनाएं। जैसे ही आप 'चाहिए' को समाप्त कर कर्म में जुट जाते हैं, आपकी मेहनत 'मोहब्बत' में बदल जाती है और आप सहज ही उड़ती कला का अनुभव करने लगते हैं।

याद रखें - संगमयुग का हर पल हीरे जैसा है। इसे 'चाहिए' की सोच में व्यर्थ न गवाएं, बल्कि 'होकर दिखाने' के निश्चय से विश्व परिवर्तन के कार्य में बाबा के मददगार बनें।

प्यारे बाबा की मुरली के अनुसार 'चाहिए' शब्द को हटाने के लिए इन तीन चरणों को अपनाएं :

1. **'तुरंत' दान महाकल्याण** – जैसे ही मन में कोई शुभ विचार आये(जैसे : किसी को माफ करना, योग करना या मुरली पढ़ना), तो उसे तीन सेकण्ड के अन्दर क्रियान्वित करें। बाबा कहते हैं कि यदि आप तीन सेकण्ड से ज़्यादा सोचेंगे तो मन 'चाहिए' और 'लेकिन-परंतु' के जाल में फंस जायेगा।
2. **स्वमान का अभ्यास** – दिन में कम से कम दस बार खुद को यह याद दिलाएं :- मैं 'चाहिए' वाला बच्चा नहीं', मैं 'करके' दिखाने वाला मास्टर रचयिता हूँ।
3. **रात की कचहरी** – रात को सोने से पहले बाबा को अपना पोतामेल दें। यदि किसी कार्य में 'चाहिए' शब्द रुकावट बना तो उसपर बाबा की याद में फुलस्टॉप(.) लगाएं और संकल्प करें कि कल वह कार्य 'होकर रहेगा'।

सिरोही-राज.। जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती रूपा गुप्ता को नव वर्ष की शुभकामनाएं देने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. अरुणा दीदी, शांतिवन के अधिवक्ता ब्र.कु. प्रदीप एवं ब्र.कु. बबीता।

झालावाड़-राज.। उद्यानिकी वानिकी एग्रीकल्चर कॉलेज में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए डॉ. हिमांशु गोयल। मौके पर उपस्थित रहे ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. तपस्विनी, कॉलेज डीन डॉ. मौर्य एवं विद्यार्थीगण।

अयोध्या-उ.प्र.। अयोध्या विकास प्राधिकरण के वाइस चेयरमैन अश्विनी कुमार पांडे से स्नेह मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि। साथ हैं ब्र.कु. शैलजा।

अलीगढ़-रघुवीर पुरी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिविल हॉस्पिटल में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. जगबीर सिंह वर्मा व उनकी धर्मपत्नी, चीफ फार्मासिस्ट डॉ. रवि दीक्षित तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें व हॉस्पिटल स्टाफ।